REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

अध्यापक शिक्षा में चुनौतियाँ और शारीरिक शिक्षा

डॉ. सरोज राय
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग , जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं–नागौर (राजस्थान)

सारांश

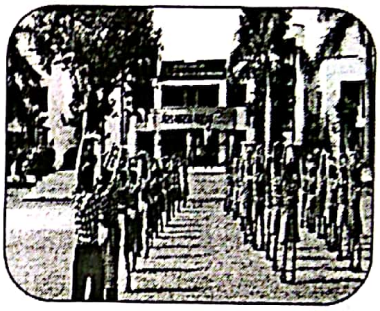

इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) के अन्वेषिका (2005) के आलेख में "भारतीय सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा–परिदृश्य एवं चुनौतियां" में वर्णित निम्नांकित विचार एकदम समीचीन एवं प्रासंगिक है कि– एक व्यापक गतिशील, मूल्यों पर आधारित संवेदनशील, उत्तरदायी, वैश्वीकरण की विवशताओं से निपटने का सामर्थ्य रखने वाली दूरदर्शी अध्यापक शिक्षा विकसित करना, हमारी सबसे बड़ी चुनौती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अध्यापक शिक्षा पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि – हम यह भलीभांति समझ गये है कि विचार युक्त शैक्षिक पुनर्निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है। हमें इस बात की दुःखद अनुभूति है कि– शिक्षक की सामाजिक स्थिति, वेतनमान, सेवाकालीन परिस्थितियां अत्यन्त असंतोषप्रद है।

आधुनिक समय में शारीरिक शिक्षा की भूमिका की मान्यता में निरन्तर वृद्धि हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा और खेल चार्टर, यूनेस्को (1978) में उल्लेख है कि– "प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक शिक्षा एवं खेल के लिए उसकी पहुंच होना उसका मौलिक अधिकार है, जो कि उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए अनिवार्य है। शारीरिक शिक्षा और खेल के माध्यम से शारीरिक बौद्धिक व नैतिक शक्तियां विकसित करने की स्वतन्त्रता की गारन्टी शैक्षिक प्रणाली और सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं दोनों के अन्तर्गत होनी चाहिए।"

इस प्रकार से हम कह सकते है कि वर्तमान में अध्यापक शिक्षा के साथ–साथ शारीरिक शिक्षा की उपयोगीता एवं महत्व अत्यधिक है। आधुनिक समाज में शारीरिक शिक्षा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास में सहायक होगी। इसी प्रकार वर्तमान शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों को अपने क्षेत्र एवं ज्ञान की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक सन्दर्भों से तालमेल बिठाते हुए, वैधानिक व आवश्यकता के पट्रीय एवं वैश्विक सन्दर्भों से तालमेल बिठाते हुए, वैधानिक व आवश्यकता के पट पर अपनी एक पहचान बनानी होगी। तभी जाकर हम एक व्यापक, गतिशील, उत्तरदायी, संवेदनशील एवं मूल्यों पर आधारित 'अध्यापक शिक्षा' का शंखनाद कर सकेंगे।

प्रस्तावना :

किसी भी देश का भविष्य उसकी आने वाली पीढ़ी पर निर्भर करता है तथा उसका स्वरूप कैसा हो इसकी जिम्मेदारी शिक्षकों पर होती है। कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि– "भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।" यह सत्य है कि इन कक्षाओं का निर्देशन शिक्षक के हाथ में होता है।

Scanned by CamScanner